IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

रिसर्च पेपर

चुनावी कुम्भ में मतदान में सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ रूपेश शर्मा

अतिथि सहायक आचार्य

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय,हरिद्वार।

rupeshsharmaibn7@gmail.com

Abstract-

21 वीं सदी मैं उन्नत संचार प्रौद्योगिकी की ने समाज के हर पहलू को इतना संकुचित कर दिया है कि आज का समाज सोशल मीडिया के बिना दुनिया की कल्पना तक नहीं कर सकता है। सोशल मीडिया ने आज हर क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित किया हुआ है। खासतौर पर भारतीय राजनीति के क्षेत्र में ये राजनेताओं की सक्रिय राजनीतिक भागीदारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय लोकतन्त्र की आधारशिला में स्वतन्त्र मीडिया की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय मीडिया की भूमिका तब ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है जब यह चुनाव के दौरान राजनीतिक परिणामों को प्रभावित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैसे तो भारतीय राजनीति में सोशल मीडिया विभिन्न मंचों व विभिन्न रूपों में विकसित हुआ है। ट्वीटर, फेसबुक, इंस्टग्राम, यूट्यूब तथा वाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक जीवन में भारतीय मतदाताओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के नए–नए तरीके प्रदान करते हैं। जहाँ पर चुनाव व चुनावी प्रतियोगिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पिछले कई वर्षों से पारम्परिक प्रिंट मीडिया व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया ने मतदाताओं के बीच जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है लेकिन बदलते जमाने के साथ–साथ सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभरा है, जिसने न केवल भारतीय मतदाताओं को जागरूक किया तथा साथ ही साथ उन्हें मतदान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया है। आज भारत की सभी पार्टियों से जुड़े नेता सभी सोशल मीडिया पर अधिक सक्रिय दिखाई देते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्तिगत संचार जनप्रतिनिधि और पार्टियों को उनके मतदाताओं को करीब लाने का काम करता है। आज सैंकड़ों नेटवर्किंग साइट के माध्यम से भारतीय राजनीतिक दल और उनके उम्मीदवार समाज के जनमानस के साथ सीधे संवाद करने और उनके साथ बातचीत करने में सक्षम हो जाते हैं। बदले में सोशल मीडिया साइटों के माध्यम से मतदाता क्षेत्र भी प्रदान किए जाते हैं। अपनी राय साझा करने और सुने जाने के लिए एक मंच भारत में 2014 के लोकसभा चुनाव से आज 2019 के लोकसभा चुनाव के समय तक देश के नागरिकों ने सोशल मीडिया का सर्वोत्तम सम्भव तरीके से उपयोग किया है। उसमें चाहे पटियों का घोषणा पत्र हो या चल रहे राजनीतिक भाषणों की जगह हो इत्यादि इन सब का आदान–प्रदान सोशल मीडिया के माध्यम से ही सम्भव है। सोशल मीडिया पर उन राजनेताओं के वीडियो अधिक प्रसारित होते हैं जिन पर वह सम्बन्धित दूसरी पार्टियों के राजनेताओं पर कटाक्ष करते हुए दिखाई देते हैं। राजनेता चुनावी कुम्भ में सभी मर्यादाओं को त्यागकर एक–दूसरे पर जिस

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

प्रकार से कीचड़ उछालते हैं , वह बयान सोशल मीडिया पर सुर्खियां बनकर आम जनमानस के मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं।

सोशल मीडिया ही वह साधन है जो चुनाव में राजनेताओं को युवाओं के साथ चर्चा करने को मजबूर कर देता है। युवाओं के रोजगार, पेपर लीक, महंगाई जैसे मुद्दों पर जवाब देने के लिए इन राजनेताओं को मजबूर होना पड़ता है। जनता से रूबरू होकर उनसे जुड़ी परेशानियों का जवाब सोशल मीडिया के माध्यम से होता है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया लोकतन्त्र में मतदान के महत्व के बारे में अपने स्तर से जागरूकता पैदा करता है।

Keywords-

लोकसभा चुनाव, प्रिंट मीडिय, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया, व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टग्राम।

परिचय–

वर्तमान परिवेश में सोशल मीडिया को एक सशक्त उपकरण के रूप में माना जाता है। लोकतन्त्र को मजबूत बनाने में सोशल मीडिया अनमोल सम्पत्ति के रूप में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हुआ नजर आ रहा है। 21 वीं सदी के इस युग में सोशल मीडिया का संचार जाल चारों तरफ फैल गया है। समाज का कोई भी वर्ग आज के इस दौर में सोशल मीडिया की उपयोगिता से वंचित नहीं है। सोशल मीडिया प्रचार–प्रसार में अहम भूमिका का निर्माण कर रहा है। वर्तमान की राजनीति सोशल मीडिया इंटरनेट के बिना अधूरी है। आज प्रत्येक युवा या यह कहें कि प्रत्येक व्यस्क व्यक्ति के हाथों में मोबाइल फोन है जो इंटरनेट के माध्यम से संसार से जुड़ा हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति की पहुंच दूसरे व्यक्ति तक आसान हो गई है। आज किसी भी जानकारी हासिल करना काफी आसन हो गया है। किसी भी राजनेता का मोबाइल विस्तृत श्रृंखला से जुड़ा हुआ है। यहाँ राजनेता अपने विचारों को ऑनलाइन के माध्यम से आदान–प्रदान करते हैं। इसके माध्यम से ही वह अन्य समुदायों में शामिल हो जाते हैं। उनके विचारों को उनके मुद्दों को यहाँ पर आसानी से समझा जा सकता है।

आमतौर पर सोशल मीडिया से जुड़ी विभिन्न प्रकार की सेवा में ब्लॉक सोशल नेटवर्किंग साइट्स स्टेटस अपडेट सेवा में मीडिया शेयरिंग साइट्स शामिल है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हर वर्क की भागीदारी पर जोर देता है। जहाँ पर आप अपने विचारों को खुलेपन से रख सकते हैं अपनी बातचीत की कनेक्टिविटी को बढ़ावा दे सकते हैं। यह सोशल मीडिया की ही तो ताकत है। जहाँ पर आज अपने फोटो और वीडियो का आदान–प्रदान कर सकते हैं। अपनी कहानियों को किस्से को समाज से जुड़े समाचारों को अपने विचारों को आसानी से पोस्ट कर सकते हैं। सबसे बड़ी बात आप अपने घर में बैठकर विदेश में हो रही चर्चाओं में हिस्सा भी ले सकते हैं। सोशल मीडिया यह एक ऐसा मंच है जहाँ पर व्यक्ति समाज से जुड़े संगठन से जुड़े जनप्रतिनिधियों को बड़ी संख्या में लोगों को एक–दूसरे के बीच संवाद स्थापित करने की अनुमति प्रदान करता है। स्वतन्त्र मीडिया एक स्वस्थ लोकतन्त्र की आधारशिला रखता है जो चुनावी मौसम में राजनीति व राजनीतिक चर्चाओं को प्रभावित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्माण करता है। सोशल मीडिया प्रौद्योगिकी ने चुनाव अभियानों को एक नया रूप दे दिया है। कई राजनीतिक पार्टियों ने अपनी पार्टी न अपनी की वेबसाइट फेसबुक पेज और ट्वीटर पर अपना अकाउंट तक देखा रखा है। इन पार्टियों

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

के कार्यकर्ता नियमित रूप से अपनी पार्टी की सभी गतिविधियों को इन सभी सोशल मीडिया की साइट पर अपने कंटेंट डालते रहते हैं। जिससे पार्टी अपने विचारों से आम जनमानस में अपनी जगह बना पाती है राजनीतिक नेता सोशल मीडिया पर जनता और अपने कैडरों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए भी दिखाई पड़ते हैं। यह सभी राजनेता उत्साह पूर्वक सोशल मीडिया की ताकत को अपने चुनाव अभियान में प्रयोग करते हैं। अपने कार्यकर्ताआकों को भी इसको प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं। सोशल मीडिया के कारण हुए इस बदलाव ने उन्हें मतदाताओं के काफी करीब ला दिया है। राजनीतिक पार्टियों इन पार्टियों से जुड़े सभी राजनेता इस संचार क्रान्ति का जमकर आनंद उठा रहे हैं। साइबर दुनिया की यात्रा कर रहे हैं।

लोकसभा चुनाव में सोशल मीडिया ने कई नए मूल्य स्थापित किए–

आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आजकल आधुनिक चुनाव अभियान प्रणाली का एक प्रमुख तत्व बन गई है। वर्तमान में सभी राज्यों के राजनेतओं ने अपनी वेबसाइट और अपने ब्लॉक बनाए हुए हैं। ताकि यहाँ पर आकार उनके क्षेत्र की जनता उनके बारे में ज्यादा से ज्यादा उनसे संबंधित जानकारी को हासिल कर सकती है साथ ही उनके द्वारा क्षेत्र के विकास के साथ नई परियोजनाओं की जानकारी उन्हें यहाँ पर आसानी से प्राप्त होती रहती है। राजनेताओं को ध्यान में रखकर व उन्हें लाभ पहुंचने के लिए सामाजिक सॉफ्टवेयर तक बनाए जा रहे हैं। ताकि ऑनलाइन विज्ञापन खोज इंजन के परिणाम पेज बैनर सोशल नेटवर्किंग मार्केटिंग आदि पर विज्ञापन से लाभ उठाया जा सके वर्तमान के चुनावी दौर में इसी तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। भारत में 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान सभी राजनीतिक पार्टियों ने अपने उम्मीदवारों के पक्ष में वोट जुटाने के लिए सोशल मीडिया का ही उपयोग किया है। यहाँ सोशल मीडिया की ताकत को समझने के लिए सभी राजनेता विशेष रूचि भी ले रहे हैं। वह जानते हैं कि इस साधन से वह मतदाताओं को राजनीतिक जानकारी देने के साथ–साथ अन्य मतदाताओं के साथ संवाद स्थापति कर पाने में अहम भूमिका निभाएंगे वेबसाइट पर जनता सोशल मीडिया पर प्रचुर मात्रा में हाइपरलिंक के साथ बहुआयामी रूप से जुड़े हुए हैं। सोशल मीडिया के उपयोगगकर्ता समाचार और सूचनाओं को प्राप्त करने व इन सूचनाओं को प्रसारित करने में सक्षम हो चुके हैं। सोशल मीडिया परम्परागत मीडिया से बहुत अलग है। यह समझ में लोगों को बहुत ही आसानी से आ जाता है। यह समाचारों और सूचनाओं का आदान–प्रदान करने की अनुमति देता है। फेसबुक, इंस्टाग्रम, यूट्यूब, ट्वीटर, व्हाटसएप जैसे सोशल मीडिया के टूल वर्तमान राजनीति को परिवर्तन करने में अपनी अहम भूमिकर निभा रहे है। संचार प्रौद्योगिकी को समाचार पत्र रेडियो और टेलीविजन जैसे परम्परागत मीडिया के रूप में माना जाता है। चुनाव जीतने के बाद निर्वाचित प्रतिनिधि राजनीतिक जानकारी को जताने व अपने भाषण में पैनी धार देने के लिए और आम जनमानस के साथ संवाद स्थापित करने के लिए सोशल मीडिया की ताकत को महसूस कर रहे हैं। भारत में कोई ऐसा राजनीतिक दल नहीं है जिसका अपना सोशल मीडिया सेल नहीं हो जहाँ पर सम्बन्धित पार्टी से जुड़े कार्यकर्ता दिन–रात एक करके अपनी पार्टी के विचारों को जनता के बीच रखते है और अपनी पार्टी और सोशल मीडिया पर अपने नेता का गुणगान करते हैं वहीं दूसरी तरफ अन्य पार्टी की गतिविधियों पर बारीकी से नजर बना कर भी रखते हैं।

भारत में चुनाव पद्धति–

भारत का अस्तित्व 15 अगस्त 1947 को स्वरूप में आया जिसका आधार धर्मनिरपेक्ष लोकतान्त्रिक है साथ ही दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र भी है। भारत सरकार संसदीय पद्धति वाला एक संवैधानिक

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

मजबूत लोकतन्त्र है। इस पद्धति के मूल में नियम अनुसार नियमित निष्पक्ष करवाने की वचनबद्धता है। लोकतन्त्र सुन्दरता तभी कायम रह सकती है। जब भारत का हर नागरिक बिना किसी भय के किसी दबाव के अपने वोट का उपयोग कर पाता है। किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ऐसे निष्पक्ष चुनाव आदर्श विचारों को स्थापित करते हैं। वैसे तो चुनाव शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द एलिगर से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ चुनना है जिसे सरकार की प्रणाली का हिस्सा माना जाता है। किसी भी लोकतान्त्रिक देश में चुनाव महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि देश की जनता अपना नेता चुनने के लिए जो उनके हितों का ध्यान रखें और देश का विकास कर सके। ऐसे नेता को चुनने के लिए अपने वोट के अधिकार का उपयोग करते हैं वैसे तो आम जनता को अपना नेता चुनने के लिए अपने नेता के दोष व गुणों को सही से मूल्यांकन कर लेना चाहिए। उनका नेता शिक्षित तो ही साथ ही साथ दूर दृष्टि वाला भी होना चाहिए। लोकतन्त्र में चुनाव नागरिकों को वह ताकत देते हैं जिसे जनता जिस किसी को सत्ता की स्थिति में देखना चाहती है उसे इस चुनाव की पद्धत्ति से चुनकर उसे सांसद बनाकर लोकसभा में भेजती है। यह चुनाव पद्धति संसद के दोनों सदनों की सदस्यता और राज्य केन्द्र शासित प्रदेशों विधान मंडलों की विधानसभाओं का निर्धारण करती है। भारत के राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति का पद इस व्यवस्था की संरचना का सर्वोच्च निकाय है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में चुनाव आयोग सभी चुनावों को करवाने की व्यवस्था करता है। वैसे तो भारत में हर साल किसी न किसी प्रकार का चुनाव होता ही रहता है। कभी विधानसभा का कभी पंचायत का तो कभी निकाय चुनाव का। जहाँ पर विभिन्न दलों के विभिन्न उम्मीदवारों के बीच एक प्रतियोगिता का माहौल बन जाता है। जिसमें मतदाता अपने मत की ताकत से अपने प्रतिनिधित्व का चुनाव करते हैं। इन चुनाव में जो उम्मीदवार होते हैं वह जरूरी नहीं किसी पार्टी से आवश्यक रूप से जुड़े ही हो ऐसे चुनाव में स्वतन्त्र उम्मीदवार भी अपने प्रतिनिधित्व का चुनाव करते हैं। इस चुनाव में जो उम्मीदवार होते हैं। वह जरूरी नहीं किसी पार्टी से आवश्यक रूप से जुड़े ही हों। ऐसे चुनाव में स्वतन्त्र उम्मीदवार भी अपनी ताल ठोकते हैं। चुनाव आयोग का महत्वपूर्ण कार्य उस क्षेत्र के निर्वाचन का परिसीमन उसे क्षेत्र के मतदाताओं की सूचनी को तैयार करना है। उम्मीदवारों के नामांकन पत्र को दाखिल करना, इन नामांकन पत्रों की गहनता से जांच करना, और नामांकन वापसी के बाद चुनाव करवाने की व्यवस्था देखना, फिर निष्पक्ष मतदान करवाना, मत पत्रों की गिनती करना, अधिक मत पाए उम्मीदवारों के परिणामों की घोषणा करना यह सभी चरण भारतीय चुनाव व्यवस्था के ही हिस्से में आते हैं। विभिन्न राजनीतिक पार्टियां अपने उम्मीदवारों के लिए सार्वजनिक रेलियों का आयोजन करती हैं ताकि वह मतदाताओं तक आसानी से पहुंच सकें। शहरों की गलियों, मौहल्लों की दीवारों पर उम्मीदवारों के पोस्टर चिपकाए जाते हैं। हर घर में उम्मीदवारों के परचों का वितरण कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है। रोड शो करके ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने का कार्य किया जाता है। चुनावी कुम्भ में उम्मीदवार अपने कार्यकर्ताओं के साथ घर–घर जाकर वोट मांगता है। यदि यह साधन भी कम पड़ने लगते हैं तब वह मीडिया में विज्ञापनों का उपयोग करता है।

वर्तमान परिवेश में सोशल मीडिया–

भारत एंड्राइड मोबाइल के उपभोक्ता का अग्रणी देश बन चुका है। आज भारत का प्रत्येक व्यक्ति संचार उपकरणों का उपयोग करके उसका आनन्द उठा रहे हैं। साथ ही संचार के साधन भारतीय सामाज में काफी लोकप्रिय भी हो रहे हैं। अभी भी इन साधनों में बदलाव की काफी गुंजाइश बाकी बची हुई। भारत के अधिकांश युवा वर्ग साथ ही सिविल सेवा से जुडे प्रशासनिक अधिकारी सोशल मीडिया के उपकरणों का उपयोग करके जटिलताओं को सुलभ बनाने का कार्य कर रहे हैं। स्मार्ट होते फोन के उपलब्धता सोशल

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

मीडिया के उपयोग भारत के विकास की नई तस्वीर खींच रहे हैं। भारत जैसे देश में संचार प्रौद्योगिकी का विस्तार बड़ी ही तेजी से हो रहा है। इस विस्तार की पहुंच भी बड़ी तेजी से लोगों के बीच अपना स्थान बना रही है। यह सोशल मीडिया ही है जो विभिन्न स्थानों के लोगों को दूसरे स्थान के लोगों से जोड़ने का कार्य सहजता से कर पाता है। अब किसी व्यक्ति को दूसरे किसी देश में बैठे व्यक्ति से संवाद करने में दूरी कोई मायने नहीं रखती। सोशल मीडिया वह प्लेटफॉर्म है जहाँ युवा से लेकर नौकरी पेशा व्यक्ति अपने कार्यों में कैसे गुणवत्ता ला सकते हैं। वह इस मंच के माध्यम से सीख भी सकते हैं। साथ ही जो इन कार्यों को कर रहे हैं उन्हें करता हुआ देखकर प्रेरित भी हो सकते हैं। पहले का जो मीडिया था जिसे आप पारम्परिक मीडिया भी बोल सकते हैं वहीं एकमात्र साधन था जो चुनाव में जागरूकता पैदा करने में अपनी अहम भूमिका निभाता था। लेकिन आज हालात बदल गए हैं। आज सोशल मीडिया के आने से मतदाताओं को मत के प्रति जागरूकता करने में मतदाताओं की भागीदारी को सही से समझााने में उनको काफी प्रभावित करती है। मतदाता सोशल मीडिया के माध्यम से इतना जागरूक हो गया है कि वह मतदान वाले दिन उठकर अपने वोट को डालकर खुद को काफी गौरवान्वित महसूस करता है। जिस उंगली पर वोट देने के बाद जो स्याही लगी होती है। उसकी फोटो को खींचकर सोशल मीडिया के माध्यम से उसे अपलोड करके बाकी के युवाओं को वह मतदान करने की प्ररेणा देता है।

किसी राजनीतिक दल उससे जुड़े राजनेताओं के लिए सोशल मीडिया का मंच किसी वरदान से कम नहीं है। यहाँ पर आकर वह जनता का समर्थन हासिल करते हैं। अपनी नीतियों व विचारों को समझाने में अग्रिण भूमिका निभाते हैं। यही वह मंच है जहाँ पर आकर वह अपनी जनता के साथ सीधा संवाद स्थापित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात इस प्रकार है कि सोशल मीडिया अत्याधिक प्रेरित लोगों को अधिक आसानी से एक संदर्भ बनाने की अनुमति देता है जिससे सोशल मीडिया से प्रेरित लोग खुद को कार्य करता बनने में अपनी रूचि व्यक्त कर सकते हैं यही कार्यकर्ता भविष्य में राजनेताओं के लिए अनुकूल माहौल बनाने में अपना सब कुछ लगा देते हैं। सोशल मीडिया की बढ़ती ताकत का आंकलन कर राजनेता अपनी राजनीतिक रणनीति तैयार करते हैं जो विपक्षी रानीतिक पार्टियों की रणनीति को ध्वस्त कर देती हे। किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कांग्रेस ने भाजपा को गाली दी या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को खून का सौदागर बोला तभी भाजपा ने इसकी प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस को 84 के दंगों की मुख्य पार्टी बताया। इस प्रकार की टीका टिप्पणी राजनेताओं और पार्टियों में लगातार देखने को मिलती है। इसका माध्यम सोशल मीडिया ही बनता है। राजनेताओं के यह बयान आम जनमानस को नेता विशेष या पार्टी विशेष के प्रति साहनुभूति बटोरने में काफी मददगार साबित होते है। इस टीका टिप्पणी से राजनेताओं का भी आंकलन किया जाता है। राजनेताओं के यह बयान आम जनमानस को या उनके वोटरों को कितना प्रभावित करते हैं। यह चुनाव के दौरान लगी लंबी–लंबी लइान बताने में कारगर होती है। जनता द्वारा डाला गया वोट किसी भी राजनेता या उसकी पार्टी के लिए सबसे बढ़ी ताकत होती है। आम जनमानस वोट डालने तभी जाता है जब वह किसी पार्टी या किसी राजनेता से प्रभावित होता है। वोट डालकर वह अपने राजनेता के प्रति अपना कृतज्ञता का भाव रखता है। 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान पश्चिम बंगाल में लगातार हो रही हिंसा ने कहीं न कहीं ममता बनर्जी के शासन पर प्रश्न चिन्ह खडे कर दिए हैं। जिसका खामियाजा ममता बनर्जी को 2019 के लोकसभा चुनाव में भुगतना भी पड़ा, वहाँ पर भाजपा ने सहानुभूतियों का वोट पाकर अपनी कई सीटों को मजबूत बनाया। पश्चिम बंगाल में हुए खूनी संघर्ष ने चुनाव को तो प्रभावित किया है वहीं पूरे देश में सोशल मीडिया के माध्यम से यह मैसेज गया कि पश्चिम बंगाल अब सुरक्षित हाथों में नहीं हैं। वहाँ पर हो रही हिंसा ममता सरकार ही करवा रही है। ममता के गुंडे ही भाजपा के लोगों को

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

घर जा कर मार रहे हैं। जिसके कारण भाजपा को वहाँ पर सहानुभूति वोट मिलता हुआ नजर आ रहा है। लोग भाजपा के प्रति अपना मत कर भाजपा को मजबूत बना रहे हैं। वर्तमान समय में किसी भी घटना को आप ज्यादा देर तक छुपा कर नहीं रख सकते कोई भी छोटी सी छोटी बात कब बड़े रूप में बदल जाए यह किसी को भी पता नहीं होता। इन सूचनाओं को बड़ा रूप देने का कार्य सोशल मीडिया ही करता है। सोशल मीडिया ही आम जनमानस को इन खबरों से रूबरू करवाता हे। आज हर किसी के हाथों में एंड्रॉयड मोबाइल है तो सूचना सैंकड़ों में पहुंच जाती है। सोशल मीडिया पर तैरती इस प्रकार की खबरें राजनीतिक पार्टियों पर अपना कोई न कोई प्रभाव अवश्य डालती है। जिस प्रकार कुछ पार्टियां धर्म पर आधारित राजनीति करती है, कुछ जाती पर आधारित राजनीति करती है और कुछ राष्ट्रवादी व सनातन को लेकर राजनीति करती है। तब इन किसी भी पार्टी का कोई बड़ा राजनेता अपना कोई बयान देश की मीडिया के सामने या किसी सार्वजनिक मंच पर देता है तो वह खबर सोशल मीडिया के माध्यम से सुर्खियां बन जाती हैं जिससे राजनीतिक दल उस खबर को किस रूप में लेते हैं और पार्टी उस खबर को लेकर किस प्रकार की धारणा बनाती है। उस पार्टी की धारणा ही उस पार्टी के वोट बैंक में अपना विश्वास कायम रखवाती है। उदाहरण के तौर पर 2019 के लोकसभा के चुनाव में मणि शंकर अय्यर का एक बयान काफी सुर्खियों में रहा जिसमें उन्होंने पाकिस्तान के चैनल को दिए एक इंटरव्यू में कहा कि यदि भारत और पाकिस्तान के रिश्तों को मजबूत करना है तो मोदी को प्रधानंत्री पद से हटाना होगा। आखिकर कांग्रेस पार्टी ने इस बयान से पूरी तरह से दूरी बनाना ही उचित समझा और बयान जारी कर यह कहना पड़ा कि यह मणि शंकर अययर का अपना व्यक्तिगत बयान है। अपनी इस धारणा को कांग्रेस पार्टी ने जनता के सामने स्पष्ट किया मगर तब तक धर्म व राष्ट्रवादी विचार पर राजनीति करने वालों ने कांग्रेस को देश विरोधी पार्टी तक साबित कर दिया था। यह सब सोशल मीडिया की ही ताकत है जो किसी की छवि को बना भी सकता है और उसकी छवि को बिगाड़ भी सकता है। इसलिए आज राजनीतिक पार्टियों अपने उम्मीदवारों की प्रोफाइल में सोशल मीडिया के माध्यम से यह ढूंढ लेती है कि जिस प्रकार की घटना का वर्णन उसने अपनी प्रोफाइल में किया हुआ है। वह घटना सच में सत्य भी है ऐसे ही उसने अपनी प्रोफइाल में बड़ा चढ़ाकर लिखा हुआ है। आज भारत में हो रहे चुनाव में सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण ताकत बनकर उभरा है। सोशल मीडिया के यह सभी मंच राजनेताओं के लिए ही नहीं यह मंच मतदाताओं के लिए भी है जहाँ नई पीढ़ी इन राजनेताओं को देख समझ रही है और इनकी ओर आकर्षित भी हो रही है।

भारत में 2019 लोकसभा चुनाव में सोशल मीडिया की भूमिका–

2019 में हुए लोकसभा चुनाव कई चरणों में हुए इस दौरान कई नेताओं ने अपने प्रतिद्वंदियों पर जमकर हमला व कटाक्ष करने के लिए जाना जाएगा। जिस प्रकार के शब्दों का इस्तेमाल इस बार के चुनाव में हुआ है उसके लिए इस लोकसभा के चुनाव को लम्बे समय तक याद रखा जाएगा। इन सब कटाक्ष में सोशल मीडिया का जमकर इस्तेमाल किया गया। लोकसभा चुनाव से पहले भीमा कोरेगांव हिंसा की तपिष ने पूरे महाराष्ट्र को जला कर रख दिया था। महाराष्ट्र में उस दौरान काफी हिंसक प्रदर्शन तक हुए जोकि सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा वायरल भी हुआ और चर्चा का विषय भी बने जिससे भारत सरकार की छवि राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी खराब हुई जिसकी भरपाई भारत सरकार द्वारा करना बड़ा मुश्किल हो गया था। विपक्ष ने भारत सरकार पर तरह–तरह के आरोप लगाकर उसकी काफी आलोचना की। 2018 में आए ट्रिपल तलाक की प्रथा पर रोक लगाने के मकसद से जो बिल लाया गया था उस पर सड़कों पर जिस प्रकार बवाल हुआ और सोशल मीडिया पर उन उपद्रव्यों की क्लिप बनाकर लोड की जा रही थी ताकि सरकार पर दबाव बनाया जा सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

2019 का लोकसभा चुनाव इसलिए भी खास हो गया था क्योंकि 14 फरवरी 2019 को पुलवामा हमला हुआ जिसमें सीआरपीएफ के कई जवान शहीद हो गए। उसके बाद भारतीय वायु सेना की तरफ से पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्टाइक की यह घटना ऐसे समय पर घटी जिसने 2019 के चुनाव का रूख ही भारतीय जनता पार्टी की ओर कर दिया। पुलवामा हमले ने देश के हर नागरिक के मन में पकिस्तान के प्रति नफरत का भाव भर दिया था। ऐसे समय में मोदी सरकार ने पाकिस्तान पर जो कठोर फैसला लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय जनता पार्टी पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने में सफल हुई। उस समय की यह सभी घटनाएं सोशल मीडिया पर तेजी से एक–दूसरे के पार आ भी रही थी और साथ तेजी से ही दूसरों को भेजी भी जा रही थी। अब राजनीतिक पार्टियां ही नहीं अब तो सरकार भी सोशल मीडिया के प्रभाव को महसूस करने लगी है। राजनीतिक दलों को भी सोशल मीडिया के असर का एहसास होने लगा है। भारत को लोकतान्त्रिक व्यवस्था में पहले लोगों की भागीदारी लेना ज्यादा महत्वपूण्र नहीं लगता था क्योंकि उन्हें केवल श्रोता ही समझा जाता था। यह बात सोशल मीडिया के आने से पहले की है लेकिन आजकल परिदृश्य बिल्कुल बदल गया है और बड़ी संख्या में लोग स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं उन्हें राजनीतिक बयान बाजियों पर टिप्पणी करने का मौका मिल गया है। राजनीतिक निर्णय पर अपनी राय रखने का मौका भी इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर मिल गया है।

निष्कर्ष–

2014/2019 का लोकसभा चुनाव सोशल मीडिया पर ही आधारित चुनाव माना जा सकता है। लोकसभा चुनाव में हिस्सा लेने वाली सभी पार्टियों कहीं ना कहीं परम्परागत मीडिया का सहारा लेती है तो कई पार्टियों परम्परागत मीडिया के साथ–साथ न्यू मीडिया का सारा भी लेती है जिन पार्टियों ने सोशल मीडिया की ताकत को सही समय पर पहचान लिया वह पार्टियां अपने राजनेताओं के साथ–साथ अपने कार्यकर्ताओं को भी उन्नत बना पाई, जो राजनीतिक पार्टियों सोशल मीडिया पर ज्यादा प्रभावी रूप से एक्टिव रही उन्हीं पार्टियों ने जनता के बीच में ज्यादा जगह बनाई। जनता ने भी उन पार्टियों को ज्यादा वोट करें जिन्होंने उनके हितों की बात करी जो उन्हें गारंटी के रूप में अपना विश्वास भी जताते हैं। 2019 के चुनाव में सभी पार्टियों ने बड़े–बड़े दावे किए लेकिन मतदाताओं ने उन पार्टियों को अपना मत दिया जो सही से अपनी बात को जनता के बीच में रख पाए। यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है कि जो भी पार्टियों ने सोशल मीडिया की ताकत को सही समय पर पहचान लिया वही पार्टी आज औरों से अलग दिखाई देती है। जिन पार्टियों ने समय के अनुसार अपने को नहीं बदला या न्यू मीडिया को नहीं पहचाना वह पार्टी हासिए पर आ चुकी है जैसे सीपीएम, सीपीआई, बीएसपी मुस्लिमलीग इत्यादि बहुत सी पार्टियां हैं। जिन्होंने समय के अनुसार ना तो खुद को बदला ना अपने राजनेताओं को बदला और ना ही अपने कार्यकर्ताओं को बदला जिस कारण आज ऐसी पार्टियों, चुनाव में एक–एक वोट के लिए तरसती दिखाई देती है। न्यू मीडिया किसी भी पार्टी की रीड़ की हड्डी बन गया है। जो पार्टी न्यू मीडिया के माध्यम से आम जनमानस के एंड्रॉयड फोन पर अपनी जगह नहीं बना पाए वह पार्टी अपने मतदाताओं के मस्तिष्क में भी जगह नहीं बना पाते। आज किसी भी राजनेता का पढ़ा लिखा होना अति आवश्यक है। पढ़ा लिखा होगा जो राजनेता वह अपनी भावनाओं को अपने विचारों को हिन्दी या इंग्लिश दोनों माध्यम से जनता के बीच अपना संवाद आसानी से स्थापित कर पाएगा। आज सोशल मीडिया पर कई प्लेटफॉर्म है जहाँ पर नई पीढ़ी के राजनेता अपने विचारों को अपने भी भाषणों को अपने भावों को रखकर अपने लिए वह अपनी पार्टी के लिए आपके मतों को अपनी पार्टी के लिए मांगते हैं। ऐसे राजनेता जो पढ़े–लिखे होते हैं सोशल मीडिया की ताकत को जानते हैं वह तथ्य अनुसार व आंकड़ों के अनुसार सामने वाले मतदाता को यह समझा पाता

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

है कि वह अन्य से अलग क्यों है। उसकी आगे की रणनीति अपने क्षेत्र के प्रति अपने क्षेत्र की जनता के लिए क्या है ऐसे राजनेता अपनी रणनीति को सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने क्षेत्र के हर व्यक्ति तक अपनी पहुंच बना पाते हैं। भविष्य में ऐसे ही राजनेता चुनाव लड़कर देश की संसद में आपकी बात रखते हैं।

Reference-

1. Dewing Michael. Social media an introduction.

Social affairs division, parliamentary information and research services 2010.

2. Mayfield. Is blogging innovation journal? http//www.innovationjounral.org//archive/INJ O Baltaziz,pdf.

3. Arulchelvan, S. New media communication strategies for election campaigns: Experience of Indian political parties. Online Journal of communication and media technologies, vol-4,issue- 3 Anna University India 2014.

4. Mafua Melina. Internet advertisings. http://unjobs.org/tages/internet-ads 2002.

5. N. Narasimhamurthy. Use and rise of social media as Election campaign in India. Publish in

international journal of interdisciplinary and multidisciplinary studies. ISSN-2348-0343 Vol.1,

no.8, 202-209. 2014. Available online at http://www ijims.com.

6. Ali Raisa. Representative democracy and concept of free and fair election. New Delhi: deep and deep publication, p-14, 1996.

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 09, Iss 01, 2020

7. Maheswari Shriram. The general election in India. Allahabad, Chetanya publishing, 1963.

8. Wani Gayatri, Alone Nilesh. A survey on impact of social media on election system. Published in International journal of computer science and information technologies. ISSN:0975-9646, vol.5 (6) 2014. Pp7363-7366